पाठ 11. प्रताप

पाठ का परिचय

यह पाठ ऐतिहासिक कथानक पर आधारित है। प्रताप का जन्म 1540 में मेवाड़ के राणा उदयसिंह के यहाँ हुआ था। प्रताप में वीरता और साहस के गुण के साथ-साथ गंभीरता और त्याग के भी गहन भाव थे। प्रताप बचपन से ही भारत-माता की मुक्ति के उपाय सोचते रहते थे। उनके मामा झालोड़ के राय अक्षयराज उनके संरक्षक थे। वे भी उनमें देशभक्ति के भाव भरते रहते थे। प्रताप के सामने सदा वीर राणा सांगा का आदर्श रहता था। प्रताप ने राणा सांगा के दिल्ली-विजय के अधूरे स्वप्न को अपना लक्ष्य बना लिया था। एक दिन कुछ गड़रिये अपनी भेड़-बकरियों को चरा रहे थे तो लगभग दर्जन-भर मुगल सैनिक उधर से आ निकले। उन्होंने गड़रियों को मार-पीटकर भगा दिया और उनकी भेड़-बकरियाँ हाँककर ले गए। जब प्रताप को यह बात पता लगी तो वे अपनी तलवार हाथ में लेकर अपने घोड़े पर सवार होकर निकल पड़े। तीव्र वेग से वे मुगल सैनिकों तक पहुँचे और देखते ही देखते उनमें से अधिकांश सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया, शेष ने भागकर अपने प्राण बचाए। गड़रियों को उनकी भेड़-बकरियाँ सौंपकर प्रताप राजमहल लौट गए। गर्वित पिता ने पुत्र को सीने से लगा लिया। यही प्रताप आगे चलकर महाराणा प्रताप के रूप में प्रसिद्ध हुए।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

देश सेवा करने वाले लोग श्रेष्ठ होते हैं। अपने-आप को देश को समर्पित करना हर किसी के बस की बात नहीं होती। अपने लिए तो सभी जीते हैं, धन्य होते हैं वे लोग जो दूसरों के लिए अपने जीवन को होम कर देते हैं।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका कक्षा में पाठ का आदर्श वाचन करें। वाचन करने के दौरान कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। नए शब्दों के उच्चारण बार-बार करें। इसके बाद बच्चों से वाचन करवाएँ। उनके उच्चारण पर पूरा ध्यान दें। बीच-बीच में उनसे प्रश्न करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा करें –

- महाराणा प्रताप के बारे में तुम क्या जानते हो?
- देश की सेवा करना क्यों श्रेष्ठ माना जाता है?
- मानव प्रेम का पाठ सभी को पढ़ना क्यों आवश्यक है?
- क्या आज भी प्रताप जैसे लोग इस दुनिया में हैं?